E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

तत्र श्लोक चतुष्टयम्

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

भारतीय आलोचक मण्डली अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क की प्रशंसक होते हुए भी उसके चार श्लोकों की मनोहरता एवं उत्कृष्टता का विशेष गुणगान करती है-"तत्र श्लोकचतुष्टयम्"। श्लोक चतुष्टय में परिगणित श्लोकों को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं, परन्तु अधिकांश विद्वान् जिन चार श्लोकों को लेकर एकमत हैं उन चार श्लोकों के महत्त्व का श्लोकोल्लेखपूर्वक यहाँ प्रतिपादन किया जायेगा-

प्रथम श्लोक है-

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः।।

"यास्यत्यद्य....." इस श्लोक के माध्यम से पुत्री-वियोग की ऐसी असह्य वेदना व्यञ्जित हुई है जो वीतरागी एवं निर्विकारचेता महर्षि कण्व के अन्तस्थल को भी झकझोर देती है। जिस प्रकार वियोग-विधुर क्रौञ्च पक्षी के करुणामय विलाप को सुनकर महर्षि वाल्मीकि का मूक शोक 'मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः' इस श्लोक के रूप में मुखरित हो गया-'शोकः श्लोकत्वमागतः'। उसी प्रकार इस श्लोक में भी पिता कण्व की पुत्री-वियोग सम्बन्धी व्यथा वाचाल हुई है। 'स्तम्भितवाष्पवृत्ति कलुषकण्ठ' तथा 'चिन्ताजडदर्शन कण्व' की व्यथा को व्यञ्जित करने में भाषा का सौन्दर्य सहायक हो रहा है। इस श्लोक में महर्षि कण्व के पितृहृदय की अतिशय स्निग्धता, सरसता और परम कारुणिकता का परिचय मिलता है। सांसारिक मोह-माया का परित्याग कर देने वाले तथा गृहस्थी में होने वाले सम्बन्धों से ऊपर उठे हुए वनवासी कण्व को शकुन्तला के पतिगृहगमन के समय जब इतनी तीव्र वेदना

है तो गृहस्थ लोगों को कितनी होती होगी-इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है< इस प्रकार भाव एवं भाषा के मधुर संयोग से व्यञ्जित करुणा (करुण विप्रलम्भ) सहृदय के हृदय को हठात् रससिक्त कर देता है। इस श्लोक की सर्वोत्कृष्टता एवं मनोरमता सुतरां स्पष्ट है। अतः इसके बारे में यह उक्ति सर्वथा संङ्गत एवं समीचीन है-"यास्यत्ययेति तत्रापि श्लोकः सर्वमनोहरः"।

द्वितीय श्लोक है-

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्"।।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सर्वोत्तम चार श्लोकों में से यह भी एक श्लोक है। इस श्लोक से यह ज्ञात होता है कि शकुन्तला प्रतिदिन पहले आश्रम के वृक्षों को सींचती थी और बाद में जलपान करती थी। इस श्लोक के माध्यम से एक ओर जहाँ प्रकृतिकन्या शकुन्तला का वनस्पतियों के प्रति स्वाभाविक स्नेहातिशय तथा सान्निध्य व्यञ्जित होता है वहीं दूसरी ओर समदर्शी महर्षि कण्व का शकुन्तला की ही भाँति, उन वृक्षों के प्रति भी वात्सल्यातिशय प्रकट होता है। पौधों के प्रति शकुन्तला का स्नेह और वात्सल्य इतना प्रबल था कि उन्हें बिना सींचे उसे स्वयं जल को ग्रहण करने की इच्छा तक नहीं होती थी-जल पीने की बात ही दूर रही। इसके द्वारा प्रकृति और मानव के बीच परस्पर आत्मीय भाव का सजीव चित्रण किया गया है। वृक्षों में पहले-पहल पुष्प निकलने पर शकुन्तला प्रसन्नता से नाच उठती थी, हर्ष और उल्लास के साथ उत्सव मनाती थी। कण्व की दृष्टि में शकुन्तला केवल उनकी ही बेटी नहीं अपितु वह पूरे आश्रम निवासियों की बेटी है, अतः विदाई के लिये सभी से अनुमति माँगना सर्वथा उचित है। मानव एवं प्रकृति का यह मधुर सौहार्द भाव किसको नहीं अनुप्राणित करता!

तृतीय श्लोक है-

अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मन-

स्त्वय्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।

सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया

भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं बधूबन्धुभिः।।

दुष्यन्त के लिये भेजे गये कण्व के इस सन्देश में अनेक गम्भीर तथ्यों का उद्घाटन हुआ है। "संयमधनान्" जहाँ एक ओर यह द्योतित करता है कि महर्षि कण्व ने जिस प्रकार दुष्यन्त तथा शकुन्तला के गान्धर्व विवाह को कृपापूर्वक अनुमति प्रदान कर दी उसी प्रकार वे उसका अनादर होने पर शापादि दण्ड देने में भी समर्थ हैं, वहीं दूसरी ओर वह उनके (कण्व के) दहेज आदि न देने की असमर्थता की भी अभिव्यक्ति करता है। दुष्यन्त को उसके उच्च वंश का स्मरण कराने 'उच्चः कुलं चात्मनः' का अभिप्राय उसे अपने वचनों का पालन करने से है। वस्तुतः महर्षि कण्व ने महाराज दुष्यन्त के लिए यह सन्देश दिया है कि अपने विश्वविख्यात कुल पुरुवंश को याद करके आपके द्वारा कोई भि ऐसा आचरण नहीं करना चाहिए, जिससे आप का ऊँचा कुल कलङ्कित हो जाए। तात्पर्य यह है कि आपको (महाराज दुष्यन्त को) ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे शकुन्तला को कोई कष्ट न होने पाए। यदि शकुन्तला को किसी प्रकार का कष्ट हुआ तो आपके (महाराज दुष्यन्त के) कुल की अपकीर्ति होगी। बिना बन्धु बान्धवों की अनुमति के ही शकुन्तला की दुष्यन्त के प्रति स्नेह-प्रवृत्ति 'अबान्धवकृताम्' की चर्चा का लक्ष्य यही है कि दुष्यन्त उसके प्रति किसी भी प्रकार अपनी कृतघ्नता को प्रकट न करें क्योंकि शकुन्तला ने उसके लिये अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया है। इसके माध्यम से महर्षि कण्व महाराज दुष्यन्त को यह सन्देश देना चाह रहे हैं कि आपको (महाराज दुष्यन्त को) यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि शकुन्तला का प्रेम उसके बान्धवों द्वारा नहीं कराया गया है, अपितु स्वाभाविक है। बन्धु-बान्धवों के द्वारा कराए गए विवाह में वर-वधू को यह शिकायत करने का अवसर रहता है कि वे इस सम्बन्ध में सहमत नहीं थे। आपका (महाराज दुष्यन्त का) यह परम कर्तव्य है कि आप शकुन्तला के स्वाभाविक प्रेम की रक्षा करें। श्लोक के उत्तरार्द्ध में कण्व द्वारा अपनी पुत्री के लिये समान आदरभाव 'सामान्यप्रतिपत्ति' की याचना तथा अधिक सुख की प्राप्ति को भाग्याधीन

'भाग्यायत्तमतः' बतलाना तत्कालीन बहुपत्नी प्रथा की विवशता तथा बड़े जनों की भाग्यवादिता की अभिव्यक्ति कराता है। इस दृष्टि से यह सन्देश निस्सन्देह बहुत महत्त्वपूर्ण मार्मिक तथा गम्भीर है।

चतुर्थ श्लोक है-

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीने
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहीणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।।

शकुन्तला को दिये गये कण्व के इस उपदेश में तो पूरी भारतीय संस्कृति ही प्रतिबिम्बित होती है। गुरुजनों की सेवा करना, सपत्नियों के प्रति सख्य भाव रखना, पति के अपमान करने पर भी उसके प्रतिकूल न होना, सेवकों के प्रति कृपालु एवं उदार होना, भोग्य वस्तुओं के कारण अभिमान न करना, इन्हीं गुणों के कारण तो कोई भी नववधू गृहिणी पद की प्राप्ति कर सकती है। इन गुणों से विहीन नववधू पितृकुल एवं पतिकुल दोनों के लिये शोचनीय हो जाती है। पतिगृह को जाने वाली शकुन्तला को दिया जाने वाला यह उपदेश वस्तुतः समस्त नववधुओं के लिये दीक्षोपदेश है। इस प्रकार का सार्वभौम एवं शाश्वत उपदेश तो कालिदास जैसे भारतीय संस्कृति के उपासक महाकवि द्वारा ही सम्भव है।